International Conference – 2025: Developed India @ 2047
Charting Multidisciplinary and Multi-Institutional Pathways for Inclusive Growth and Global Leadership held on 4th & 5th April, 2025
Organised by: IQAC - Gossner College, Ranchi

भारतीय ज्ञान परंपरा: दिव्याङ्ग विमर्श के विशेष संदर्भ में

सोमप्रकाश

शोधार्थी, हिन्दी विभाग, राँची विश्वविद्यालय, राँची.
ई-मेल – somprakash827@gmail.com

शोध -सार

'भारत' शब्द , **"भा" और "रत"** दो शब्दों से मिलकर बना है। "भा" शब्द का अर्थ है- ज्ञान रूपी प्रकाश और "रत" शब्द का अर्थ है- लीन,रमा हुआ इत्यादि। इस प्रकार 'भारत' शब्द का अर्थ हुआ, जो ज्ञान रूपी प्रकाश में रत है,लीन है। भारत आदिकाल से ही अपनी ज्ञान-परंपरा के कारण पूरे विश्व का गुरु रहा है। भारतीय ज्ञान परंपरा समस्त भूमंडल में अनन्य,अद्भुत एवं अतुलनीय है। वेद की ऋचाओं से लेकर कथा साहित्य तक ज्ञान की अजस्र धारा बहती रही है। भारतीय ज्ञान परंपरा अत्यंत समृद्ध है। इसका उद्देश्य समस्त मनुष्य जीवन को चार आश्रमों में विभक्त कर, मानव जीवन के चार पुरुषार्थ धर्म,अर्थ,काम,एवं मोक्ष की प्राप्ति करना रहा है। भारतीय ज्ञान परंपरा के आर्ष ग्रंथ जैसे वेद,उपनिषद,पुराण एवं गीता में प्रचलित दिव्याङ्ग चरित्रों की चर्चा देखने को मिलती है। दिव्याङ्ग चरित्र सदा से ही कभी हास्य का केंद्र बिन्दु रहे तो कभी खलनायक के रूप में इनकी चर्चा की गई, परंतु हमारे भारतीय ज्ञान परंपरा के ग्रन्थ एवं साहित्य में दिव्याङ्ग चरित्रों की चर्चा केवल नकारात्मक रूप में ही नहीं अपितु सकारात्मक रूप में भी की गई है। 'महर्षि अष्टावक्र', 'महर्षि च्यवन' , 'सूर्य के सारथी अरुण' , 'वैदिक ऋचाकार दीर्घतमा', 'महाराज कंस की दासी कुब्जा', 'महाकवि सूरदास', 'मलिक मुहम्मद जायसी' जैसे अनेक महान दिव्याङ्ग चरित्रों की चर्चा भारतीय ज्ञान परंपरा में की गई है, जिन्होंने यह साबित कर दिया कि मनुष्य अपने कर्म, ज्ञान एवं पुरुषार्थ से जीवन में आगे बढ़ता है। शरीर तो बस एक माध्यम है , दृढ़-इच्छा शक्ति के आगे शारीरिक दुर्बलताएं भी नगण्य हो जाती हैं। ऐसे दिव्याङ्ग चरित्रों की चर्चा करना एवं उनके संघर्षों से प्रेरणा लेना ही दिव्याङ्ग विमर्श का मूल उद्देश्य है।

बीज शब्द :- भारत, भारतीय ज्ञान परंपरा, आर्ष ग्रंथ, दिव्याङ्ग चरित्र, दिव्याङ्ग विमर्श।

International Conference – 2025: Developed India @ 2047
Charting Multidisciplinary and Multi-Institutional Pathways for Inclusive Growth and Global Leadership held on 4th & 5th April, 2025
Organised by: IQAC - Gossner College, Ranchi

प्रस्तावना

वैदिक युग से ही भारत ज्ञान और विज्ञान की धरती रहा है। वेदों और पुराणों को ज्ञान का अप्रतिम भंडार माना गया है। भारत के तक्षशिला,नालंदा ,काशी, विक्रमशिला आदि स्थान ज्ञान एवं शोध के केंद्र रहे हैं। सम्पूर्ण भू-मण्डल से शिक्षार्थी यहाँ आकार धर्म,व्याकरण,ज्योतिष,वेद,उपनिषद आदि अनुशासनों में ज्ञानार्जन किया करते थे। बोधायन, चरक, कणाद, नागार्जुन, भर्तृहरि, शंकराचार्य जैसे अनेकानेक महापुरुषों ने इसी धरती पर जन्म लिया और अपनी प्रतिभा एवं साधना से भारतीय ज्ञान परंपरा को समृद्ध किया । इस ज्ञानाहुति में ऋषिकाएं एवं विदुषियों ने भी अपनी उल्लेखनीय भूमिका निभाई है। मैत्रयी,अपाला,गार्गी,ऋतंभरा,लोपमुद्रा आदि प्रमुख नाम प्रसिद्ध हैं।

'भारत' शब्द, "भा" और "रत" दो शब्दों से मिलकर बना है। "भा" शब्द का अर्थ है- ज्ञान रूपी प्रकाश और "रत" शब्द का अर्थ है- लीन, रमा हुआ इत्यादि। इस प्रकार 'भारत' शब्द का अर्थ हुआ, जो ज्ञान रूपी प्रकाश में रत है, लीन है। ऋग्वेद के समय से ही भारतीय शिक्षा-प्रणाली केवल पुस्तकीय ज्ञान पर आधारित नहीं रहा। भारतीय परंपरा में शिक्षा या ज्ञान का मुख्य उद्देश्य अज्ञानता से मुक्ति प्रदान करना है। "सा विद्या या विमुक्तये" अर्थात् विद्या वही है जो मुक्ति प्रदान करे। भारतीय ज्ञान परंपरा समस्त विश्व में अनन्य,अद्भुत एवं अतुलनीय है। वेद की ऋचाओं से लेकर कथा-साहित्य तक ज्ञान की अजस्र धारा बहती रही है। भारतीय ज्ञान परंपरा अत्यंत समृद्ध है। इसका उद्देश्य समस्त मनुष्य जीवन को चार आश्रमों में विभक्त कर, मानव जीवन के चार पुरुषार्थ धर्म,अर्थ,काम एवं मोक्ष की प्राप्ति करना है। इसी ज्ञान परंपरा में समाज के एक ऐसे वर्ग की चर्चा मिलती है जो सदा से ही उपहास का पात्र रहा है। समकालीन युग में भी इन्हें खलनायक अथवा मज़ाकिया पात्र के रूप में देखा जाता है। इस वर्ग को 'दिव्याङ्ग" (विकलांग) नामक शब्द से संबोधित किया जाता है। आज इक्कीसवीं सदी में जहां हर विमर्श जाति और लिंग पर आधारित है , वहीं 'दिव्याङ्ग-विमर्श' शुद्ध मानवतावादी दृष्टि पर आधारित अभिनव विमर्श है। भारतीय ज्ञान परंपरा के ग्रन्थों में ऐसे अनेक दिव्याङ्ग चरित्रों की चर्चा की गई है जिन्होंने यह साबित कर दिया कि मनुष्य अपने कर्म, ज्ञान एवं पुरुषार्थ से जीवन में आगे बढ़ता है। शारीरिक अक्षमता केवल बाह्य रूप का विषय है। दृढ़-संकल्प शक्ति, प्रबल इच्छा शक्ति, सभी प्रकार की दुर्बलताओं पर विजय प्राप्त करने में सहयाक सिद्ध होती है। ऐसे ही प्रमुख दिव्याङ्ग चरित्रों पर विचार-विमर्श करना इस शोध-आलेख का प्रमुख उद्देश्य है।

International Conference – 2025: Developed India @ 2047
Charting Multidisciplinary and Multi-Institutional Pathways for Inclusive Growth and Global Leadership held on 4th & 5th April, 2025
Organised by: IQAC - Gossner College, Ranchi

भारतीय ज्ञान परंपरा में चर्चित प्रमुख दिव्याङ्ग चरित्र

1. महर्षि च्यवन

विश्व का सबसे बड़ा महाकाव्य 'महाभारत' के आदि पर्व के अंतर्गत च्यवन ऋषि नामक दिव्याङ्ग चरित्र का वर्णन है। यह भृगु पुत्र च्यवन अत्यंत प्रतापी थे। एक बार एक सुंदरी राजकुमारी अपनी सहेलियों के साथ वन भ्रमण के लिए आई थी। तब उसे एक पेड़ के नीचे दीमकों की बाबी में चमकती हुई चीज दिखाई पड़ती है। उत्सुकता वश उस राजकुमारी ने नुकीले कांटे से वेध दिया। तब वह चमक नष्ट होकर रक्त की धारा बहने लगी। इस भय से राजकुमारी चीख उठी। महर्षि च्यवन जो वर्षों से तपस्या रत थे, उनकी आंखों में नुकीले काँटों के धसने की पीड़ा से कराह उठे। च्यवन ऋषि ने उस राजकुमारी के अनजाने में हुए अपराध के कारण उसे शाप नहीं दिया और उसकी क्षमा प्रार्थना स्वीकार कर ली। राजकुमारी के पिता ने च्यवन ऋषि से अपनी पुत्री का विवाह कर दिया। इस प्रकार एक राजा अपनी पुत्री का विवाह **नेत्रहीन** वृद्ध महर्षि च्यवन से कर दिया जो विकलांगों के प्रति सहदयता को दर्शाता है। [1]

2. महर्षि अष्टावक्र

अष्टावक्र त्रेतायुग के प्रसिद्ध और तेजस्वी मुनि थे। उन्हें तत्कालीन युग के ब्रहमज्ञानियों में गिना जाता था। राजा जनक ने इन्हें अपना गुरु बनाया था।अष्टावक्र उद्यालक ऋषि के प्रिय शिष्य कहोड़ मुनि के पुत्र थे। उद्यालक ने अपनी पुत्री सुजाता का विवाह मुनि कहोड़ के साथ किया था। एक कर जब सुजाता गर्भवती थी और कहोड़ वेद पाठ कर रहे थे, तभी गर्भ से आवाज आई कि "आपका उच्चारण अशुद्ध है"। यह सुनते ही कुपित कहोड़ ने गर्भस्थ शिशु को उसके आठ अंग टेढ़े हो जाने का शाप दे दिया।

कहोड़ धन की खोज में जनकपुर गये, तो वहाँ के राज पंडित बंदी ने शास्त्रार्थ में पराजित कर उन्हें जल-समाधि लेने पर विवश कर दिया। इधर आठ टेढ़े, अंगों सहित शिशु का जन्म हुआ और उसका नाम अष्टावक्र पड़ा। जब अष्टावक्र बारह वर्ष का हुआ तब अपने मामा श्वेतकेतु के साथ, बंदी से शास्त्रार्थ करने के लिए जनकपुर गया। जहां द्वारपाल ने उन्हें प्रवेश देने से मना कर दिया। तब अष्टावक्र ने द्वारपाल को उत्तर दिया –

नैह्ययनैर्न पत्वितेर्न वित्तेन न बन्धुमिः।
ऋषयष्चक्रिरे धर्मयो 'नुचानः सनो महान।। [2]

International Conference – 2025: Developed India @ 2047
Charting Multidisciplinary and Multi-Institutional Pathways for Inclusive Growth and Global Leadership held on 4th & 5th April, 2025
Organised by: IQAC - Gossner College, Ranchi

अर्थात् न अधिक उम्र से, न बाल पकने से, न धर्म और न अधिक भाई-बन्धु रहने से कोई बड़ा होता है। ऋषियों ने कहा है कि जो अंगों सहित सम्पूर्ण वेदों का स्वाध्याय करने वाला वक्ता है वही बड़ा है, महान है।

दरबार में उपस्थित सभी विद्वान,सभासद,मुनि अष्टावक्र के टेढ़े-मेढ़े शरीर को देख कर हँस रहे थे, तभी अष्टावक्र भी ज़ोर से हँस पड़ें और उन्होने राजा जनक से कहा कि " मैंने सुना था कि आपके दरबार में सभी ज्ञानी उपस्थित रहते हैं,परंतु यहाँ तो चमड़ों के व्यापारी उपस्थित हैं। ज्ञानी मनुष्य आत्मा को, ज्ञान को महत्व देता है न कि शरीर को।" अष्टावक्र का बंदी से शास्त्रार्थ होता है जिसमें बंदी की हार हो जाती है,परंतु अष्टावक्र बंदी को जलसमाधि नहीं लेने देते और जीवन दान कर देते हैं। उनकी इस प्रतिभा को देख कर राजा जनक उन्हें अपना गुरु बना लेते हैं। दिव्याङ्ग व्यक्ति भी अपनी प्रतिभा से समाज में सम्मान प्राप्त कर सकता है। आज समाज को चाहिए कि दिव्याङ्गों को उपेक्षा कि दृष्टि से न देख कर उनका सम्मान करें, उनसे प्रेम करें।

3. सूर्य के सारथी अरुण

यह कथा सतयुग से ली गई है। दक्ष प्रजापति की दो कन्याएँ थी- कद्रू और विनीता । दोनों का विवाह महर्षि कश्यप के साथ हुआ था। एक दिन महर्षि कश्यप ने अत्यंत हर्ष के साथ उन दोनों पत्नियों को प्रसन्नतापूर्वक वर देते हुए कहा-तुममें से जिसकी जो इच्छा हो मांग लो। इस पर कद्रू ने महान तेजस्वी एक हजार नागों को पुत्र रूप में पाने का वर मांगा। विनीता ने कद्रू के समान वीर ,तेज और बल से युक्त दो ही पुत्रों का वर मांगा। कद्रू को एक हज़ार नाग पुत्रों की प्राप्ति हुई परंतु विनीता को पुत्र रत्न की प्राप्ति नहीं हुई। विनीता के द्वारा अपने एक अंडे को अविकसित अवस्था में फोड़ दिया गया जिससे दिव्याङ्ग 'अरुण' का जन्म हुआ । जन्म होते ही वह आकाश में उड़ गया और अपनी माँ को दूसरे पुत्र के लिए धैर्य धारण करने को कहा। कुछ वर्षों के पश्चात पूर्ण विकसित दूसरे अंडे से ' गरुड़' का जन्म हुआ जो सर्पों के काल के रूप में जग प्रसिद्ध हैं। ऐसा माना जाता है कि 'अरुण' ही सूर्य के सारथी हैं और सुबह के समय जो आकाश में लालिमा दिखाई देती है वह अरुण की ही लालिमा है।

अरुणो दृश्यते ब्राह्मन, प्रभात समये सदा।
आदित्य रथमध्यास्ते सारथ्यं सम कल्पयत।।[3]

इस कथा से यह शिक्षा मिलती है कि सतयुग के समय भी दिव्याङ्गों के प्रति सहानुभूति लोगों के अंदर था और वे उसे सम्मान कि दृष्टि से देखते थे।

International Conference – 2025: Developed India @ 2047
Charting Multidisciplinary and Multi-Institutional Pathways for Inclusive Growth and Global Leadership held on 4th & 5th April, 2025
Organised by: IQAC - Gossner College, Ranchi

4. दिव्याङ्गों के पालन कर्त्ता भगवान शिव

संत शिरोमणि गोस्वामी तुलसीदास कृत श्री रामचरितमानस के बालकाण्ड में उल्लेखित कथा अधोलिखित है- दिव्याङ्गों की सेवा ही सच्ची मानव सेवा है, ईश्वर सेवा है। इसका प्रमाण भी हमारे अध्यात्म में दिया है। देवों के देव महादेव भगवान शंकर स्वयं विकलांगों के पोषक हैं। संसार के लोकलाज की चिंता किये बिना वे दिव्याङ्गों को अपने पास रखते हैं, उनका भरण-पोषण भी करते हैं। इतना ही नहीं उन्हें अपने विवाह में ससम्मान बाराती बनाकर ले जाते हैं। उन्होंने दिव्याङ्गों का मान बढ़ाया तथा समाज में उनकी पहचान बनाई। यद्यपि ब्रह्मा, विष्णु के साथ सभी देवता बाराती बनकर गये थे तथापि वे दिव्याङ्गों को भी बाराती बनाना नहीं भूले। [4]

" नाना वाहन नाना वेशा, विहसे शिव समाज निज देखा।
कोउ मुख हीन, विपुल मुख काहू,
बिनु पद कर कोउ बहु पद काहू।
विपुल नयन कोउ नयन विहीना,
रिष्ट-पुष्ट कोठ अति तन खीना।
तनखीन कोउ अति पीन पावन, कोउ अपावन गति धरे।
भूषन कराल कपाल कर सब सद्य सोनित तनभरे।
खर स्वान सुअर मृगाल मुख गन वेश अगनित को गनै।
बहु जिनस प्रेत पिसाच जोगी जमात बरनत नहीं बने।" [5]

अर्थात् जब भगवान शिव स्वंय दिव्याङ्गों के प्रति प्रेम करते हैं उनका मान सम्मान बढ़ाते हैं तो हमें भी दिव्याङ्गों के प्रति प्रेम और सद्भावना रखनी चाहिए।

5. कूर्मदास

कूर्मदास नामदेव के समकालीन थे। शारीरिक रूप से अक्षम थे। पेट के सहारे चला करते थे। एक दिन उन्होने पंडरपुर की असाढ़ी कार्तिकी यात्रा की महिमा सुनी। वे वहाँ जाने का विचार कर चार माह निरंतर, पेट के बल रेंगते हुए लहुस नामक स्थान पर पहुँचा। दूसरे दिन एकादशी थी। उनका वहाँ पहुँचना असंभव था। उन्होंने दर्शनार्थियों के हाथ एक चिट्ठी भिजवाई। उस चिट्ठी में लिखवाया था कि "हे भगवान! यह बिना हाथ-पैर का आपका दास यहाँ 'लहुस' में पड़ा है। कल तक यह आप तक नहीं पहुँच सकता, इसलिए आप ही दया करके

International Conference – 2025: Developed India @ 2047
Charting Multidisciplinary and Multi-Institutional Pathways for Inclusive Growth and Global Leadership held on 4th & 5th April, 2025
Organised by: IQAC - Gossner College, Ranchi

यहाँ आ करके मुझे दर्शन देकर कृतार्थ करें।" उन्होंने यह चिट्ठी एक यात्री के हाथ भगवान के पास भेज दी। उस यात्री ने उस चिट्ठी को भगवान के चरणों में रख दी।

कूर्मदास लहुस में पड़े हुए आर्त स्वर में भगवान को पुकार रहे थे। स्वभाव वश प्रेमाधीन भगवान पंडरीनाथ, श्री बिट्ठल, ज्ञानदेव, नामदेव और सावंता माली के साथ कूर्मदास के सामने आ खड़े हुए। कूर्मदास धन्य हो गये। वे भगवान के चरणों में गिर पड़े, भगवान बिट्ठल नाथ जब तक कूर्मदास रहे, वहीं रहे। लहुस में जो बिट्ठलनाथ का मंदिर है वह इन्हीं कूर्मदास का मूर्त अनुग्रह है।

यह है दृढ़ इच्छाशक्ति, उच्च मनोबल, आत्मविश्वास, भगवत् भक्ति, भगवान के श्री चरणों में प्रेम का परिणाम। भगवान को कूर्मदास के पास दौड़कर आना पड़ा। यही है श्रद्धा-भक्ति सच्चा प्रेम। [6]

6. महाकवि सूरदास

जन्मान्ध महाकवि सूरदास हिन्दी साहित्याकाश में सूर्य के समान हैं। इनका जन्म लगभग 1478 ई. में सीही नामक ग्राम में , ब्राह्मण परिवार में हुआ। जन्मान्ध होने के कारण इन्हें अनेकानेक कष्टों का सामना करना पड़ा। कम उम्र में ही परिवार , मित्र, साथी आदि को छोड़कर भगवद भक्ति में लीन हो गए थे। 'सूरसागर', 'सूरसारावली' ,'साहित्य लहरी' इनकी प्रमुख रचनाएँ हैं। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल के अनुसार – " जिस प्रकार रामचरित का गान करने वाले कवियों ने गोस्वामी तुलसीदास जी का स्थान सर्वश्रेष्ठ है उसी प्रकार कृष्णाचरित गाने वाले भक्त कवियों में महात्मा सूरदास जी का। वास्तव में ये हिन्दी काव्य गगन के सूर्य और चन्द्र हैं। " [7] सूरदास जी विलक्षण प्रतिभा संपन्न दिव्याङ्ग थे, जो दोनों नेत्रों से हीन होते हुए भी भगवान् श्रीकृष्ण एवं उसकी लीलाओं का ज्यों-का-त्यों वर्णन कर देते थे। संयोग एवं वियोग से भरे श्रीकृष्ण जी की लीलाओं का वर्णन भी वे अपनी बंद आंखों ही किए है, जिससे हिंदी साहित्य भरा पड़ा है। ये सब उनकी अंधी आंखों का कमाल है, जो अपने आपमें बेजोड़ हैं। ऐसे नेत्रहीन महाकवि न हुआ है और न होगा।

7. मलिक मुहम्मद जायसी

भक्ति काल के सूफी काव्यधारा के प्रमुख कवि मलिक मोहम्मद जायसी एक नेत्र वाले थे। इनकी कविताओं को पढ़कर ऐसा कौन कवि होगा जो सम्मोहित न हुआ हो।जायसी की लगभग 21 रचनाओं का उल्लेख मिलता है जिसमें 'पद्मावत' , 'अखरावत', 'आखरी कलाम' आदि प्रमुख हैं पर उनकी ख्याति का आधार पद्मावत ग्रंथ ही है। इसकी भाषा अवधी है और इसकी रचना शैली पर आदिकाल के जैन कवियों की दोहा चौपाई पद्धति का प्रभाव

International Conference – 2025: Developed India @ 2047
Charting Multidisciplinary and Multi-Institutional Pathways for Inclusive Growth and Global Leadership held on 4th & 5th April, 2025
Organised by: IQAC - Gossner College, Ranchi

पड़ा है। अपने एक नयन होने के विषय में जायसी का कथन है-जैसे दाग (कलंक) के बाद भी चंद्रमा संसार भर को सुखद उजाला देता है, वैसे ही विकलांग कवि विश्व को काव्य-प्रकाश से आनंद प्रदान करता है।

"एक नयन कवि मुहमद गुनी।
सोई बिमोहा जेहि कवि सुनी।।
चांद जैस जग विधि औतरा।
दीन्ह कलंक कीन्ह उजियारा।।
जग सूझा एकै नयनाहाँ।
उआ सूक जस नखतन्ह माहाँ।।" (पद्मावत)

निष्कर्ष:

भारतीय ज्ञान परंपरा में अनेक दिव्याङ्ग चरित्रों का वर्णन उपलब्ध है, जो किसी-न-किसी कारण प्रसिद्ध हुए हैं, परंतु कुछ दिव्याङ्ग चरित्र ऐसे थे , जो विलक्षण प्रतिभा के धनी थे, जिन पर प्रकाश डालना आवश्यक था। आज दिव्याङ्ग जन अपनी तीव्र बुद्धि, अदम्य साहस, विद्वत्ता, निर्भीकता, विशेष कार्य-कौशल, दृढ़ इच्छाशक्ति, कुछ कर दिखाने का उत्साह तथा विद्वत्ता में अच्छे-अच्छे ज्ञानियों एवं विद्वानों को पराजित कर देने की शक्ति रखते हैं, जो सभी के लिए प्रेरणा के स्रोत हैं। इनसे प्रेरित होकर हम सब को आगे बढ़ते रहना चाहिए, हाथ-में-हाथ धरकर बैठना नहीं चाहिए।

आज शिक्षा के प्रसार और मानवतावाद के प्रचार के कारण दिव्याङ्गों को भी हर जगह स्वीकार किया जा रहा है और समान अवसर प्रदान किया जा रहा है।समय बदलने लगा है,चेतना जागने लगी है,परिणामतः दिव्याङ्गों में अवगुण आधारित अवलोकन के स्थान पर गुण-ग्राह्यता के निकष पर निर्दिषिट करने का नज़रिया निर्मित हुआ है। दिव्याङ्गों की क्षमताओं में वृद्धि सकारात्मक सोच का परिणाम कहा जा सकता है।अब जल्द ही दिव्याङ्ग जनों के जीवन में नया सवेरा होगा, जो उनके सुनहरे भविष्य का सूर्य बनेगा।

संदर्भ ग्रंथ:

1. महाभारत,गीता-प्रेस,आदिपर्व, पृष्ठ संख्या , 64-65
2. महाभारत, गीता-प्रेस ,वनपर्व, पृष्ठ संख्या ,132-134
3. महाभारत, गीता-प्रेस ,आस्तिक पर्व, पृष्ठ संख्या ,80

International Conference – 2025: Developed India @ 2047

Charting Multidisciplinary and Multi-Institutional Pathways for Inclusive Growth and Global Leadership held on 4th & 5th April, 2025

Organised by: IQAC - Gossner College, Ranchi

4. इक्कीसवीं सदी का नव्य विमर्श: विकलांग-दिव्यांग-विमर्श,संपा-डॉ. रेखा दूबे, पंकज बुक्स, नई दिल्ली,पृ.139-140
5. श्रीरामचरितमानस, गीता -प्रेस , टीकाकार-हनुमान प्रसाद पोद्दार , बालकांड, पृष्ठ संख्या-107
6. इक्कीसवीं सदी का नव्य विमर्श: विकलांग-दिव्यांग-विमर्श,संपा-डॉ. रेखा दूबे, पंकज बुक्स, नई दिल्ली,पृ.138-139
7. हिन्दी साहित्य का इतिहास, आचार्य रामचंद्र शुक्ल, नागरी प्रचारिणी सभा ,वाराणसी, पृष्ठ संख्या-122